Quran – Summary in Hindi (114 Chapters)

©Hindi Pronotes (www.hindipronotes.com)

Quran में कुल 114 Chapters (Surahs) हैं। सभी Chapters में पवित्र आयतें दी हुई हैं। कुछ Chapters बहुत लम्बे हैं तो कुछ सिर्फ एक ही Page के हैं। आइये अब **Quran** की समरी पढ़ते हैं।

Chapter 1 Quran: Al-Fatihah (The Opening) - अल फातिहा

इस Chapter में 7 आयतें हैं जो सारे क़ुरान का सार बता देती हैं। इसमें अल्लाह का गुणगान किया गया है, उसकी तारीफ की गयी है , और उससे guidance मांगी गयी है।

साथ ही बताया गया है कि Gabriel नाम के फ़रिश्ते ने Prophet Mohammad को अल्लाह का पैगाम दिया था। जिसके आधार पर क़ुरान की रचना की गयी।

Chapter 2: Al-Baqarah (The Cow)

इस chapter में बताया गया है कि अल्लाह ने Universe की रचना कैसे की। इस्लाम के नियम -क़ानून के बारे में भी बताया गया है।

साथ ही सब Prophets की कहानियां भी दी गयी हैं। Holy book of **Quran summary in Hindi** .

Chapter 3: Al-Imran (The Family of Imran)

इस Chapter में Jesus और Mary की सारी कहानी बताई गयी है। साथ ही इसमें family और समाज के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

इसमें अल्लाह पर विश्वास करने और उसके बताये धर्म के मार्ग पर चलने का भी निर्देश दिया गया है।

- Bible Summary in Hindi – read all 66 books

Chapter 4: An-Nisa (The Women)

इस Chapter में बताया गया है कि महिलाओं के साथ इज्जत और सम्मान से पेश आना चाहिए। साथ ही शादी , तलाक, inheritance तथा स्त्री -पुरुष की जिम्मेवारियों के बारे में भी बताया गया है। (**Quran** pdf in Hindi)

Chapter 5: Al-Ma'idah (The Table Spread)

इस chapter में प्रोफेट मोहम्मद की टीचिंग्स पर चलने को कहा गया है। साथ ही दूसरों को kindness के साथ treat करने की बात कही गयी है।

Ethics , Morality और दीन -ईमान की आयतें दी गयी हैं। Holy **Quran summary in Hindi** .

Chapter 6 (Quran): Al-An'am (The Livestock)

इस Chapter में यूनिवर्स के true nature के बारे में बताया गया है। इसमें आत्मा और मृत्यु के बाद क्या होता है, इन सबके बारे में भी वर्णन किया गया है।

Chapter 7: Al-A'raf (The Elevated Places)

इस Chapter में आदम और ईव की कहानी बताई गयी है। और बताया गया है कि कैसे पाप करने के बाद उन्हें ईडन गार्डन से निकाल दिया गया था।

इस chapter में पाप न करने और अल्लाह के बताये मार्ग पर चलने की बात कही गयी है।

Chapter 8 Al-Anfal (The Spoils of War)

इस Chapter में बद्र की लड़ाई (Battle Of Badr) के बारे में बताया गया है। यह लड़ाई Muslims और उनके दुश्मनों के बीच हुई थी।

इसमें कहा गया है कि अल्लाह के लिए जिहाद (धर्म -युद्ध) करना चाहिए। और मुश्किल वक़्त में भी हौसला रखना चाहिए। Post - **Quran summary in Hindi** .

Chapter 9 At-Tawbah (The Repentance)

इस Chapter (Quran) में बताया गया है कि पाप हो जाने पर पश्चाताप करना चाहिए और अल्लाह से माफ़ी माँगनी चाहिए।

Chapter 10 Yunus (Jonah) - Quran summary in Hindi

इस chapter में Prophet Yunus के बारे में बताया गया है। Christian जिसे Prophet Jonah के नाम से जानते हैं।

इस chapter की आयतों को पढ़ने से माना जाता है कि जिंदगी में peace और खुशहाली आती है।

Quran (Chapter 11 - 20)

11. हूद: यह सूरह नूह के वंशज हुद की कहानी पर आधारित है। हुद अपने लोगों को धर्म की ओर आमंत्रित करते हैं और अपनी बात के लिए लड़ते हैं। इस सूरह में जनता की नादानी और अस्थिरता पर ध्यान केंद्रित किया गया है और उन्हें धर्म के पथ पर चलने के लिए प्रेरित किया गया है।

12. युसुफ: यह सूरह प्रतिस्पर्धा, विश्वास और आदर्श पुरुष यूसुफ की कहानी पर आधारित है। इस सूरह में परिवार और उनके संबंधों के महत्व, समझदारी, सत्यता और अनुशासन के विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

13. अर-राद: यह सूरह अल्लाह पर चर्चा करती है और यह बताती है कि कैसे उसकी ताकत logon की राहत के लिए काम करती है। इस सूरह में सब्र और स्थिरता के विषय पर भी बात की गई है।

14. इब्राहिम: इस सूरह में इब्राहिम के जीवन और उनके विचारों को व्यक्त किया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे अल्लाह की विधाओं का पालन करना महत्वपूर्ण है और जीवन में धर्म के बल पर कैसे संघर्ष करना चाहिए। इस सूरह में आस्था और उम्मीद के विषयों पर भी बात की गई है। (**Quran pdf Hindi**)

15. अल-हिज्र: इस सूरह में अल-इमरान से जुड़े कुछ विषयों पर विचार किया गया है। यह भी बताया गया है कि कैसे अल्लाह उन लोगों को दंड देता है जो इसके आदेशों का पालन नहीं करते।

16. अन-नहल: इस सूरह में अल्लाह की विविधता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे अल्लाह अपनी सृष्टि की तरक्की करता है। और वह कैसे हर चीज को control करता है।

17. अल-इस्रा: इस सूरह में यह बताया गया है कि कैसे अल्लाह उन लोगों की मदद करता है जो उसका समर्थन करते हैं। इस सूरह में समय का महत्व, समझदारी और जीवन में सफलता के विषय पर भी बात की गई है।

18. अल-कहफ: इस सूरह में तीन युवकों की कहानी के बारे में बताया गया है जो अपने समाज से नाराज हो जाते हैं और दुनिया से दूर जाते हैं। इस सूरह में अल्लाह की रहमत पर भी बात की गई है। (Source: **Quran**)

19. मरयम: इस सूरह में मरयम और उनके पुत्र ईसा के विषय में बताया गया है। यह बताया गया है कि ईसा कैसे अपने जन्म के समय से ही अल्लाह के बंदे बने रहते हैं।

20. ताहा: इस सूरह में मूसा और हरून की कहानी के बारे में बताया गया है। इसमें अल्लाह के विषय में बताया गया है कि कैसे अल्लाह अपने बंदों की मदद करते हैं। इस सूरह में बताया गया है कि कैसे धर्म के बल पर अपने संघर्ष को जीता जा सकता है।

Quran (Chapter 21 - 30)

21. अंबिया: इस सूरह में अल्लाह के messengers की कहानियों का वर्णन है। जो अपने लोगों को संदेश देने के लिए भेजे गए थे। इस सूरह में अल्लाह की ताक़त और उनके नेक बंदों के बारे में भी बताया गया है।

22. हज्ज: इस सूरह में हज्ज के विषय में बताया गया है। इसमें हज्ज की विविध विधियों का वर्णन है। जिन्हें उम्मत-ए-मुस्लिमा प्रमुख है।

23. मुमिनून: इस सूरह में मोमिनों के विशेषताओं और इनके नेक कामों के बारे में बताया गया है। यह भी बताया गया है कि कैसे एक मुस्लिम अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह के रास्ते में बिताने में सक्षम हो सकता है। (**Quran in Hindi pdf**)

24. नूर: इस सूरह में ईमान के महत्व के बारे में बताया गया है। एक मुस्लिम अपनी ज़िन्दगी को अल्लाह के रास्ते में बिताने में सक्षम हो सकता है।

25. फुर्कान: इस सूरह में ईमान, अहंकार, ताक़त जैसे विषयों के बारे में बताया गया है। इसमें अल्लाह की रहमत और उनके असली बन्दों के बारे में भी बताया गया है।

26. शुआरा: इस सूरह में कुछ दूतों की कहानियों का वर्णन है। इसमें मुश्रिकों और मुमिनों के बीच हुए युद्ध के बारे में भी बताया गया है।

27. नमल: इस सूरह में इस्लाम की सच्चाई के बारे में बताया गया है। साथ ही इसमें दाऊद और सुलेमान के बारे में भी बताया गया है। **(Summary of: Quran)**

28. कसास: इस सूरह में मूसा के बारे में बताया गया है। उसने नेक लोगों को अल्लाह के रास्ते में ले जाने के लिए कोशिश की।

29. अंकबूत: इस सूरह में ईमान के महत्व के बारे में बताया गया है। इसमें मुमिनों और काफिरों के बीच युद्ध के बारे में भी बताया गया है।

30 रूम: इस सूरह में रूम के लोगों के बारे में बताया गया है जो अपनी बुराई के बावजूद भी इस्लाम में यकीन करने लगे थे। इसमें दुनिया की समस्याओं के समाधान के लिए अल्लाह की ताक़त पर विश्वास रखने की बात की गई है।

Quran (Chapter 31 - 40)

31. लुक्मान: इस सूरह में लुक्मान हकीम के उपदेश दिए गए हैं। जो उन्होंने अपने बेटे को लोफ़ोन अच्छे से स्वस्थ करने के लिए दिए थे।

32. सजदह: इस सूरह में अल्लाह की बड़ी ताकत और इस्लाम के महत्व के बारे में बताया गया है। इसमें फिरऔन और मूसा के बीच के युद्ध का वर्णन भी है।

33. अहजाब: इस सूरह में प्रोफेट मुहम्मद की जीवनी और उनकी बीवीओं के बारे में बताया गया है। इसमें अल्लाह को पाने के लिए तकलीफें सहने की भी बात की गई हैं। (Source: **Quran**)

34. सबा: इस सूरह में सुलेमान के बारे में बताया गया है जिन्होंने अपनी ताक़त का इस्तेमाल इस्लाम के लिए किया था।

35. फातिह: इस सूरह में अल्लाह की ज़िम्मेदारी के बारे में बताया गया है जो लोगों के जीवन में खुशहाली और शांति के लिए जवाबदेह होती है।

36. यासीन: इस सूरह में मौत और इसके बाद के जीवन के बारे में बताया गया है। इसमें नबी मुसा के बारे में भी बताया गया है।

37. सफ़्फात: इस सूरह में अल्लाह की शक्ति और उसके वचनों के प्रभाव के बारे में बताया गया है। इसमें इब्राहीम और इसमाईल के बारे में भी बताया गया है। (Summary: **Quran**)

38. साद: इस सूरह में अल्लाह के नबी की जीवनी और उनके संघर्षों का वर्णन किया गया है।

39. जुमा: इस सूरह में जुमा नमाज के महत्व के बारे में समझाया गया है और यह भी बताया गया है कि कैसे इस्लाम के लिए जीवन जीना चाहिए।

40. मुएम्मिन: इस सूरह में अल्लाह के वचनों का उल्लेख मिलता है। इसमें जवाबदेह नागरिक बनने के बारे में बताया गया है। साथ ही फिरऔन के बारे में भी बताया गया है जिसने अल्लाह के वचनों का मजाक उड़ाया था।

Chapters (41 to 50)

41. हामिम सजदा: इस सूरह में अल्लाह के नामों के महत्व और कुरान के माध्यम से लोगों को उनकी सत्यता के बारे में समझाया गया है।
42. शूरा: इस सूरह में इंसान के नीति निर्धारण के बारे में बताया गया है और इसमें अल्लाह की शक्ति और उसके नबी के बारे में भी बताया गया है।
43. अज-जाथियः: इस सूरह में अल्लाह के नबी के संदेश के बारे में बताया गया है और यह भी बताया गया है कि अगले जीवन में लोगों को क्या होगा।
44. अद-दुखान: इस सूरह में अल्लाह की शक्ति और उसके नबी के संदेश के बारे में बताया गया है। इसमें समूचे कुरान का सारांश भी दिया गया है।
45. अल-जाथियः: इस सूरह में अल्लाह के वचनों की महत्ता और अल्लाह की शक्ति के बारे में बताया गया है। इसमें यह भी बताया गया है कि कैसे लोगों को जीवन जीना चाहिए।
46. अल-अहकाफ: इस सूरह में अल्लाह के वचनों के प्रभाव और उनके अस्तित्व के बारे में बताया गया है
46. अहकाफ़ (Ahqaf) - यह चौंसठवां सूरह है जिसमें अल्लाह के नामों, उनकी सत्ता और उनकी विशेषताओं पर विस्तृत बात की गई है। इसके अलावा इस सूरह में अल्लाह की रहमत, उनके नुकसान पर विचार, कुछ शायतीन और मुसलमानों की ताकत पर भी बात की गई है।
47. मुहम्मद (Muhammad) - इस सूरह में पैगंबर मुहम्मद के बारे में बताया गया है और उनके साथ हुए घटनाक्रमों का विवरण दिया गया है। इसके अलावा इस सूरह में इस्लाम के जीवनशैली, अल्लाह के नामों पर विचार, दोस्ती और शत्रुता के विषय में भी बात की गई है।
48. फ़तेह (Fath) - इस सूरह में मदीना में हुए खुदै के बाद मुहम्मद ने मक्का की फ़तेह के बारे में बताया गया है। इसके अलावा इस सूरह में इस्लाम के फलस्वरूप आनंद, अल्लाह की रहमत और मुसलमानों के जीवनशैली पर भी विचार व्यक्त किए गए हैं।
49. हुजुरात (Hujurat) - इस सूरह में मुस्लिम समाज की जीवनशैली पर विचार किए गए हैं। इसके अलावा इस वह लोग जो ईमान लाए और अपने कर्मों को सुधार लाए उनके लिए बड़ी जन्नतें होंगी।

50. Quaff: वह जो धरती और आसमान बनाया है और जो आसमान में से बारिश बरसाता है और उससे उस देश की सूखी जमीन फिर से फलदार हो जाती है, उसी से हम आपको अंधेरे में से निकालकर जगमगाती जगह में ले आएंगे। यह सच्ची दावे वाली बात है।

Chapters (51-60)

51. सूरह अध-धारियात - इस सूरह में अल्लाह के सामने जहन्नम का ख़ौफ़ और आख़िरत का दिन बताया गया है। यह बताया गया है कि कैसे समझदार लोग अपने गुनाहों से बचते हैं और अपनी रूह को उसके पालने वाले अल्लाह के पास पहुँचा पाते हैं।
52. सूरह अत-तूर - इस सूरह में जन्नत का वर्णन दिया गया है। यह बताया गया है कि कैसे अल्लाह के भक्तों को उसकी उन्नति मिलती है और उन्हें उनकी सारी जरूरतें पूरी की जाती हैं।
53. सूरह अन-नज्म - इस सूरह में इस्लाम के बुलावे की महत्वता बताई गई है। यह बताया गया है कि कैसे पैगम्बर (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उसके मक़्क़ की सैर करनी पड़ी और उसने अपने सारे जीवन के दौरान अल्लाह की सच्ची इबादत की।
54. Al Qamar - इस सूरह में अल्लाह की रहमत का बड़ा वर्णन किया गया है। यह बताया गया है कि कैसे उसने हमें अपनी रहमत और अपना करम दिखाया है और हमें उसकी सच्ची इबादत करनी च
55. अल रहमान (वह दयालु) इस सूरह में अल्लाह की दया और करुणा का वर्णन है। यह बताता है कि अल्लाह सभी जीवों के प्रति दयालु हैं। इसमें आतंकवादियों के विरुद्ध भी भेजा गया है जो अपने धर्म को बदलने के लिए लोगों के दिमाग में विचार डालते हैं।
56. अल वाकिय'अह (वह सच हो जाने वाला) इस सूरह में अल्लाह की सत्यता का वर्णन है। यह बताता है कि सब कुछ जो हमारे आसपास हो रहा है, अल्लाह की इच्छा से हो रहा है। इसमें बताया गया है कि अल्लाह ने सब कुछ सृजित किया है और अंत में हम सब उसी के पास लौट जाएंगे।
57. अल हदीद (लोहे का) इस सूरह में ईमान के महत्व और सच्चे ईमानदारों का वर्णन है। इसमें बताया गया है कि जो लोग अल्लाह के प्रति श्रद्धापूर्वक विश्वास रखते हैं वे जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं।
58. अल मुजादलह (वह जो विवाद को आगे बढ़ाता है) इस सूरह में महिलाओं के अधिकारों का वर्णन है।
59. यह सूरह अल-हश्र नामक है और इसमें अल्लाह की महिमा, उसकी शक्ति और उसकी कृपा का वर्णन है। इस सूरह में अल्लाह के गुणों के साथ-साथ, उसके द्वारा अपने भक्तों की सहायता करने की भी चर्चा होती है।
60. यह सूरह अल-मुमतहिनाह नामक है और इसमें अल्लाह की नसीहत, दया और इंसाफ का वर्णन है। इस सूरह में उसके द्वारा लोगों के बीच सद्भाव, समझौता और शांति को बढ़ावा देने की भी चर्चा होती है।

Chapters (61-70)

61. सफ़: यह सूरह अरबी में “सफ़” से शुरू होता है। इसमें अल्लाह के नाम और उसकी सिफात बताई गई हैं। इसके अलावा लोगों के लिए सलाह दी गई है और उन्हें दोजख से बचने का रास्ता बताया गया है।

62. जुमुअआ: इस सूरह में जुम्मा नामाज के महत्व का बयान किया गया है। इसके अलावा लोगों के लिए दिन-रात अल्लाह की याद करने का हुक्म दिया गया है।

63. मुनाफिकून: इस सूरह में मुनाफिकों के बारे में बताया गया है। इसके अलावा अल्लाह के नाम और उसकी सिफात पर भी बताया गया है।

64. तगाबुन: यह सूरह दूसरे सूरह की तरह नहीं है। इसमें लोगों के व्यवहार के बारे में बताया गया है जो उनके इमान पर प्रभाव डालते हैं। इसके अलावा अल्लाह के नाम और उसकी सिफात पर भी बताया गया है।

65. तलाक: इस सूरह में तलाक देने और लेने के नियमों का बयान किया गया है। इसके अलावा अल्लाह के नाम और उसकी सिफात पर भी बताया गया है।

66. तह्रीम: इस सौरे में स्वर्ग और धरती की तारीफ करने के बाद इस सौरे में अल्लाह ने अपने रसूल के जीवन और सब्र के महत्व के बारे में बताया है। सब्र और समझदारी के अंतर्गत यह

    सौरा में समाज के लिए बहुत सी सीख दी गई हैं।

67 सूरह अल मुल्क में अल्लाह की रहमत, उसकी शक्ति और उसकी शान का वर्णन किया गया है। यह सूरा मनुष्यों को उनकी निजता और उनके आखिरत के लिए जागरूक करती है। इस सूरे के पढ़ने वाले व्यक्ति के लिए अल्लाह द्वारा जन्म और मौत के मुद्दों के बारे में बताया जाता है .

68.सूरह अल-क़लम में हदीस पर चर्चा की गई है जिसमें अल्लाह की योग्यता और उसकी शक्ति का भी वर्णन किया गया है। इस सूरे में मक्की और मदीनी दोनों तरह के लोगों की बुराई की गई है। यह सूरा लोगों को उस व्यक्ति से जुड़ाव दिखाती है, जो अपनी जुबान को कंट्रोल नहीं कर पाता था और अपनी जुबान से अपने रब की तारीफ के बाद लोगों को ठेस पहुंचाता था।

69. सूरह अल-हाक़्कह में मनुष्यों के लिए नेक और बुरे कामों के फलों का वर्णन किया गया है। यह सूरा इस्लाम में विविधताओं के समानताओं को बताती है और साथ ही दिखाती है कि कैसे इस्लाम के अनुयायी नेक और ईमानदार होने का इशारा करते हैं।

70. सूरह अल-माारिज में इस्लाम के आम लोगों के साथ होने वाली बदलावों और उनकी तबाही के बारे में बताया गया है। इस सूरे में अल्लाह के शानदार गुणों का भी वर्णन किया गया है।

Chapters (71-80)

71. नूह: इस सूरह में नबी नूह की कहानी और उनके लोगों को उनकी कुफ़्र और अनुशासनहीनता के दुष्परिणामों के बारे में चेतावनी देने की उनकी मिशन की चर्चा की गई है।
72. अल-जिन्न: इस सूरह में जिन्न नामक असाधारण प्राणियों के अस्तित्व और उनके कुरान के सन्देश के स्वीकार की चर्चा की गई है।
73. अल-मुजाद्दिल: इस सूरह में अल्लाह के सामने अपनी बात रखने वाले लोगों को दूसरों से सावधान रहने की सलाह दी गई है और वे रात के प्रार्थनाओं के लिए तैयार रहने का उपदेश दिया गया है।
74. अल-मुदथ्थिर: इस सूरह में कुरान के सन्देश और एकमेवत्व और अल्लाह के अधीनता की महत्वता पर चर्चा की गई है और यह कुफ़्र के दुष्परिणामों पर जोर देता है।
75. अल-क़ियामह: इस सूरह में क़यामत के दिन के बारे में चर्चा की गई है और यह सभी मनुष्यों के सामने अल्लाह के सामने जवाबदेही के बारे में बताता है, और एकमेवत्व और अच्छे कर्मों के महत्व पर जोर
76. الانسان: यह सूरह मानव जाति के बारे में बताती है और कुरान का संदेश बताती है, और यह धन्यवाद और ईश्वर की आज्ञाकार्यता के महत्व को जोर देती है।
77. المرسلات: यह सूरह ईश्वर की शक्ति और महिमा और कुरान का संदेश के बारे में बताती है, और अविश्वास के परिणामों को जोर देती है।
78. النبأ: यह सूरह कयामत के दिन और सभी मानवों के सामने ईश्वर की जवाबदेही और एकत्व के महत्व के बारे में बताती है और अच्छे कामों और एकत्व के महत्व को जोर देती है।
79. النازعات: abasa यह सूरह कयामत के दिन और सभी मानवों के सामने ईश्वर की जवाबदेही और एकत्व के महत्व के बारे में बताती है और ईश्वर की शक्ति और महिमा को जोर देती है।
80. عبس: यह सूरह नबी मुहम्मद और उनके बहरे प्रेमी से बातचीत के बारे में बताती है और यह जोर देती है कि सभी लोगों के साथ सम्मान और दया से व्यवहार करने का महत्व है।

Quaran chapter 81 to 90 in hindi

81.सूरह अत-तकवीर: यह सूरह कयामत के दिन की भयावहता को बताती है और दुनिया के अन्त के बारे में चर्चा करती है।

82.अल-इन्फितार: यह सूरह कयामत के दिन के बारे में बताती है और इसमें संसार में होने वाले बदलावों के बारे में चर्चा की जाती है।

83.अल-मुतफफिफीन: यह सूरह भ्रष्टाचार के विरुद्ध होने वाली लड़ाई को बताती है और इसमें अल्लाह और उसके दूतों के दुश्मनों के बारे में चर्चा की जाती है।

अध्याय 84 - समय का अंत (अल इनशिकाक)

इस अध्याय में, कुरान उस समय की विस्तृत विवरण करता है जब धरती के लोगों को अंतिम दिन के आने का संदेश दिया जाएगा और वे खुदावंद से अपने कामों का हिसाब मांगने के लिए खड़े होंगे।

अध्याय 85 - मेरे रब का वादा (अल बुरूज)

इस अध्याय में, कुरान उस समय की याद दिलाता है जब यहूदी शासक हजारों मुसलमानों को मार डालते थे। यह अध्याय मुसलमानों को याद दिलाता है कि उन्हें हर मुसीबत से गुजरना चाहिए और उन्हें उनके रब का वादा याद रखना चाहिए कि उन्हें हमेशा न्याय मिलेगा।

अध्याय 86 - सुरज की रोशनी (अत तारीक)

इस अध्याय में, कुरान ने समझाया है कि सृष्टि कैसे बनी है और सूरज की रोशनी कैसे जगह-जगह जाती है। यह अध्याय आकाश की रचना और इसके संरचनात्मक विवरण को विस्तार से समझाता है।

अध्याय 87 - शब-ए-क़द्र (अला अला)

इस अध्याय में, कुरान शब-ए-क़द्र के बारे में बताता है, जो रमजान के महीने में आता है। इस रात में कुरान नाज़िल हुआ था और इसलिए यह रात बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में यह भी बताया जाता है कि यह रात शायद हज़ार महीनों से बेहतर होती है।

अध्याय 88 - बराहा (अल गाशिया)

इस अध्याय में, कुरान ने अन्तिम दिन के बारे में बताया है जब लोगों को अपने कर्मों का हिसाब मांगना होगा। इस अध्याय में यह भी बताया गया है कि कैसे धरती और आसमान समाप्त होंगे और कैसे खुदावंद सभी को न्याय देगा।

अध्याय 89 - फजर (अल फज्र)

इस अध्याय में, कुरान ने बताया है कि लोगों को खुदावंद का नाम लेना चाहिए और उसे याद रखना चाहिए। यह अध्याय उन लोगों को भी समझाता है जो अपनी ताकत का गलत उपयोग करते हैं और दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं।

अध्याय 90 - बलद (अल बलद)

इस अध्याय में, कुरान ने व्यक्तियों को उनके शहरों और उनकी संस्कृति के बारे में समझाया है। इस अध्याय में, इसलिए यह बताया गया है कि लोगों को अपनी संस्कृति को अपनाने की जरूरत होती है और उन्हें इसे बचाना चाहिए। यह अध्याय भी सामाजिक न्याय और लोगों की मदद करने के बारे में बताता है।

Quran chapter 91 to 100 in hindi

91.सूरह अश-शम्स: यह सूरह सूरज और चाँद के साथ एक और स्वर्णिम तारे के बारे में चर्चा करती है और इंसानों को इन दिव्य वस्तुओं के बनाने वाले स्वर्ग की याद दिलाती है।

92.अल-लैल: इस सूरह में रात के लिए नमाज का जिक्र किया गया है और उसके साथ ही अल्लाह के साथ ईमान के लिए सब्र और स्वयं को दुरुस्त रखने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

93.अध-धुहा: इस सूरह में इस्लाम की उपलब्धि का जिक्र है, और यह बताती है कि कैसे अल्लाह ने अपने बंदों की मदद की है।

94.अल-इनशिराह: इस सूरह में इंसानों के लिए सही राह चुनने का महत्व बताया गया है और यह उन्हें एक दृष्टिकोण प्रदान करता है जिससे वे अल्लाह की सच्ची प्रशंसा कर सकते हैं।

95.अत-तीन: इस सूरह में इंसानों के लिए उनकी उत्पत्ति के संबंध में चर्चा की गई है और यह इस्लाम के तत्वों का जिक्र करती है।

96.अल-अलाक सूरह नमाज की महत्वता, ईमान के साथ आदमी की जिम्मेदारियों और जन्नत के सवालों पर चर्चा करती है। इसमें सबसे ऊँचे आकाशों की ओर देखने का विवरण दिया गया है और उसे पार करने की तरकीब बताई गई है।

97.सूरह अल-कद्र : यह सूरह कुरान के अंतिम दस रात्रि में उतरी थी जिसे लेलतुल कद्र भी कहा जाता है। इस सूरह में अल्लाह के अस्तित्व, रहमत और गुणों का वर्णन है।

98.सूरह अल-बय्यिनह : यह सूरह ईमानदारों और काफिरों के बीच अंतर के बारे में है। इसमें बताया गया है कि जो व्यक्ति अल्लाह के साथ शिर्क नहीं करता और अच्छे काम करता है, वह स्वर्ग में जाएगा। जबकि जो लोग अपने ईमान के बारे में सच नहीं बोलते उन्हें नरक में जाना पड़ेगा।

99."अल-ज़लज़लाह" यानी "भूकम्प" सूरह में इस्लाम के दिन की तस्वीर चित्रित होती है और इसका मतलब है कि इस्लाम के दिन सारी भूमि, समुद्र और पर्वत घुम जाएंगे और लोगों के अमल के आधार पर उन्हें न्याय दिया जाएगा।

100. "अल-अदियात" सूरह में घोड़ों के दौड़ने की तस्वीर दी गई है और यह बताया गया है कि घोड़ों की तेज़ दौड़ के ज़रिए लोग युद्ध के लिए तैयार होते हैं।

Quran chapter 101 to 114 in hindi

101. अल-कारियह: यह सूरह दो तरह के लोगों के बारे में बताती है, एक जो दूसरों को अपनी गलतियों का दोष देते हैं और दूसरे जो सही राह पर चलते हैं। यह भी बताती है कि दिन के अंत में सबका हिसाब होगा।

102. अत-तकासुर: यह सूरह लोगों को उनके मतलबों और चाहतों के लिए अधिक तरक्की करने के लिए प्रेरित करती है। यह बताती है कि लोग अपने अधिकार के लिए अन्य लोगों के साथ टकराकर अपने लिए कुछ नहीं हासिल करते हैं।

103. अल-अस्र: इस सूरह में मानव जीवन की अहमियत और उसके समय की महत्वता बताई जाती है। यह बताती है कि समय एक अनमोल संपत्ति है जो इंसानों के लिए बहुत कीमती है।

104. अल-हमजा: यह सूरह असमय मृत्यु के बारे में बताती है और यह बताती है कि मृत्यु का अनुभव हर इंसान के लिए अलग-अलग होता है। यह बताती है कि कुछ लोग अपने अच्छे कामों के लिए स्वर्ग में जाएंगे और दूसरे अपने बुरे कामों के लिए नरक में जाएंगे।

105. सूरह अल-फ़ील - यह सूरह अल-अब्रार और अल-कुफ़्फ़ार के बीच लड़ाई की कहानी के बारे में है। इसमें प्रोत्साहन के बारे में भी बताया गया है जो किसी भी काम को करने के लिए जरूरी होता है।

106. सूरह कुरैश - यह सूरह मक्का के यात्रियों के बारे में है, जो अपने लड़के को जन्मदिन पर कुर्बान करते थे। इस सूरह में कुरैश लोगों को अल्लाह के द्वारा दिए गए सुखों के लिए शुक्रिया करने की प्रेरणा दी गई है।

107. सूरह अल-माून - यह सूरह सामाजिक जिम्मेदारियों के बारे में है। यह लोग अपने दैनिक कामों के लिए भलाई के लिए दान नहीं देते थे। इस सूरह में अल्लाह ने इन लोगों के दैनिक कामों को छोड़कर कुछ समय निकालकर दान करने की प्रेरणा दी है।

108. सूरह अल-कौथर - यह सूरह खैर-ए-अमल और उसके नाम पर है जो अल्लाह के द्वारा अपने नबी मुहम्मद (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए किए गए अनुग्रहों के बारे में है। इस सूरह में इस्लामिक

109. सूरह अल काफिरून दिलाती है कि जो लोग ईमान नहीं लाते या कई देवताओं की पूजा करते हैं उनसे दूर रहें। वे अपने देवताओं को पूजते हुए केवल अपने धर्म के लिए काम करते हैं और वे लोग जो ईमान लाते हैं उन्हें उनका धर्म और उनकी विश्वास वाले होने का सम्मान देते हैं।

110. सूरह अन-नास अल्लाह के गुणों, उसके रहम और उसकी संरक्षा की मांग को सभी लोगों से करती है। इस सूरह में अल्लाह की रक्षा और उनके शैतान के अंदर वाले जादू के प्रति भी बात की गई है।

111. सूरह अल-मसद: यह सूरह दो व्यक्तियों के बारे में है जो अपने धन और संबंधों से बहुत खुश थे लेकिन वे अपनी दावेदारी से बचने नहीं पाए।

112. सूरह अल-इखलास: यह सूरह तौहीद का संदेश देती है यानी एकमात्र ईश्वर की पूजा करनी चाहिए।

113. सूरह अल-फलक: यह सूरह अल्लाह से सुरक्षा के लिए दुआ करने के बारे में है और यह भी बताती है कि कैसे नजर-ए-बद से बचा जा सकता है।

114. सूरह अन-नास: यह सूरह मानव जाति के शैतान से बचने के लिए दुआ करने के बारे में है और यह बताती है कि कैसे शैतान के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा सकती है।

Read more Articles and Book summaries at:

www.hindipronotes.com